P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-IV*December-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत में पर्यटन की आवश्यकता, महत्व एवं भविष्य

सारांश

पर्यटन विविध प्रकार के प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक अवयवों तथा आधारभूत सुविधाओं जैसे– यातायात, आवासीय सुविधाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, सुरक्षा, आदि का मिश्रित अदृश्य उद्योग है। प्राकृतिक खूबसूरती इसकी सबसे बड़ी जरूरत है। इसके अलावा सांस्कृतिक सुन्दरता एवं ऐतिहासिक इमारतें इसके अन्य आवश्यक अवयव है। धार्मिक आस्था एवं स्थल भारतीय पर्यटन की जड़ से जुड़ा हुआ है और आज घरेलू पर्यटकों का एक बहुत बड़ा भाग धार्मिक यात्राएँ करता है। पर्यटन वर्तमान में विश्व का सबसे तेजी से विकसित होने वाला संसाधन है। इसकी आवश्यकता, इसके महत्व एवं भविष्य को देखते हुए दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यह जहाँ रोजगार पैदा करने की असीम क्षमता रखता है, वहीं विदेशी मुद्रा अर्जन, मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने, सांस्कृतिक आदान–प्रदान बढ़ाने एवं निर्माण कार्य जैसे क्षेत्रों में अपार संभावनायें दे सकता है।

राजबहादुर अनुरागी
सहायक प्राध्यापक,
सामान्य एवं व्यावहारिक भूगोल विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि.,
सागर, म.प्र.

मुख्य शब्द : भारतीय पर्यटन एवं पर्यटक, मानव संसाधन, पर्यटन उद्योग, स्मार्ट पर्यटन।

प्रस्तावना

पर्यटन की पृष्ठभूमि

भारतीय संस्कृति में पर्यटन आदि काल से विद्यमान था, जिसकी प्रमाणिकता अनेक भाषाओं, साहित्यिक ग्रन्थों, सांस्कृतिक धरोहरों, संरचनाओं, श्लोकों, दर्शन एवं साहित्य में आज भी देखी जा सकती है। यह बात अलग है कि इसका स्वरूप आज से भिन्न था। हमारे प्राचीन ऋषियों, महात्माओं एवं अन्वेषकों का एक स्थान से दूसरे स्थान में गमनागमन, पर्यटन का ही एक पर्याय था। जब कोई व्यक्ति या समूह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर वहाँ की समस्त जानकारियों को प्राप्त करते थे, उनके बारे में जानते थे और अपनी जिज्ञासाओं को शांत कर उन स्थानों से पुनः आकर घर, समाज और आसपास उन अनुभवों को बांटते थे, लोगों को उन स्थानों के प्रति प्रेरित करते थे, आवागमन की यह परम्परा धीरे–धीरे पर्यटन का आकार लेती गई और पर्यटन का स्वरूप धीरे–धीरे बढ़ता गया।

भारत इस क्षेत्र में पहले से भी धनी रहा है; लेकिन इसको विकसित करने के प्रति सजग नहीं था, यही कारण है कि इसका जो स्वरूप आज होना चाहिए वह नहीं है, जबकि विश्व के कई छोटे देश जैसे– थाईलैण्ड, हांगकांग, मॉरीशस, वियतनाम, सिंगापुर, स्विटजरलैण्ड ने इसके भविष्य को पहचाना और पर्यटन को विकसित किया। यही कारण है कि आज पर्यटन इन देशों की आर्थिक आमदनी का मुख्य स्त्रोत बन गया है।

पर्यटन

पर्यटन की कोई उपयुक्त परिभाषा देकर शब्द सीमा में बांधना एवं उसका अर्थ बताना कठिन है। समय के साथ–साथ पर्यटन की यात्रा में परिवर्तन होता रहा है। इसका प्रारंभिक स्वरूप भ्रमण, यात्रा और फिर पर्यटन एवं पारिस्थितिकी पर्यटन। सामान्य शब्दों में पर्यटन का अर्थ अपने घर से बाहर विभिन्न स्थानों पर जाने, ठहरने, जानने या कुछ समय व्यतीत करने से होता है। यात्रा एवं भ्रमण में समय सीमा निर्धारित नहीं थी, लेकिन पर्यटन 24 घंटों की अवधि से बाहर की सीमा में बंध गया है। आज इसका उद्देश्य, ज्ञानार्जन, मनोरंजन, शौक, शोध, सेक्स, क्षुधा, मौज–मस्ती आदि हो गया है। कुछ विद्वानों ने इसको अलग–अलग तरीके से निम्नानुसार परिभाषित किया है जैसे–

जिवाडिन जोवियक, ''पर्यटन एक सामाजिक प्रवाहन है, जो आराम, घरेलू चिन्ता से मुक्ति तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं की संतुष्टि करने के उद्देश्य से जुड़ा होता है।'' इसी प्रकार **ई. फ्रियूलर** के अनुसार ''पर्यटन वर्तमान समय की प्रमुख घटना है। यह हवा बदलने, मनोरंजन प्राप्त करने, प्राकृतिक

दृश्यों का आनंद उठाने वास्तव में समाज के अन्य वर्गों के बारे में जानने, उनसे घुलने–मिलने से जुड़ा होता है। इसी के फलस्वरूप, व्यापार, उद्योग, वाणिज्य व परिवहन का विकास होता है।''

उक्त दोनों परिभाषाओं से पर्यटन को भली प्रकार से समझा जा सकता है। इस संबंध में पं. जवाहरलाल नेहरू ने भी कहा था– 'पर्यटन परस्पर समझ –बूझ, व्यापक दृष्टिकोण तथा मित्र भावना को जागृत करता है। यह सब आज के समय की आवश्यकता है तथा देश निर्माण में पर्यटन का आगे बढ़ना जरूरी है। लगातार इसकी परिकल्पना एवं विषय सामग्री में हो रहे परिवर्तन से इसकी आवश्यकता को समझना जरूरी हो गया है।'

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र का मुख्य आधार द्वितीय आंकड़े हैं। इसके अलावा प्रकाशित एवं अप्रकाशित पुस्तकें, विविध पत्रिकायें एवं बेवसाइट की सहायता से शोध पत्र को तैयार किया गया है।

शोध का उद्देश्य

1. भारतीय पर्यटन में पर्यटकों के प्रभाव को समझना।
2. भारत में पर्यटन के विविध आयामों को जानना।
3. पर्यटन क्षेत्र की चुनौतियों को तलाशना।

पर्यटन की आवश्यकता क्यों ?

पर्यटन का वह लघु रूप जो दीर्घकाल में सीमित स्थान तक होता था वह आज और व्यापक रूप ले लिया है। आज इसकी आवश्यकता उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है। विश्व के कई देश इसको अपनी आमदनी का मुख्य साधन मान चुके हैं तथा इस दिशा में कार्य कर रहे हैं, क्योंकि इसमें निहित निम्न बातें इसके महत्व को और अधिक प्रभावी बना देती हैं–

1. ऐतिहासिक, धार्मिक, पुरातात्विक, शिल्पकला जैसे महत्व के स्थलों को देखने एवं उनको जानने की तीव्र लालसा।
2. प्राकृतिक सौन्दर्य के स्थल जैसे गुफाएँ, जलप्रपात, मनोरम घाटियाँ, पर्वत, वन्य–जीव संरक्षित केन्द्र/आवास का अवलोकन।
3. आर्थिक लाभ की दृष्टि से।
4. रोजगारपरक दृष्टिकोण से।
5. सैर–सपाटा, आनन्द, ज्ञान प्राप्ति।
6. शोध सम्बन्धी गतिविधि।

भारत में विदेशी एवं देशी पर्यटकों की स्थिति

Years	Foreign Tourist Arrivals in India (in millions)	Domestic Tourist (in millions)	Total (in Millions)
2001	2.54	236.47	239.01
2002	2.38	269.60	271.98
2003	2.73	309.04	311.77
2004	3.46	366.27	369.73
2005	6.92	392.04	398.96
2006	4.45	462.44	466.89
2007	5.08	526.70	531.78
2008	5.28	563.03	568.31
2009	5.17	668.80	673.97
2010	5.78	747.70	753.48
2011	6.31	864.53	870.84
2012	6.58	1045.05	1051.63
2013	6.97	1142.53	1149.5
2014	7.68	1282.80	1290.48
2015	8.03	1431.97	1440

Source : (1) Ministry of Tourism, Govt. of India,far Jan-June-2016
(2) State/UT Tourism Department.

उक्त सारणी को देखने से यह प्रतीत होता है कि कुछ वर्षों में भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन में कुछ कमी देखी गई है जबकि अधिकांश वर्षों में विदेशी पर्यटकों में लगातार वृद्धि होती दिखाई दे रही है। वहीं घरेलू पर्यटकों की सारणी में आसातीत वृद्धि दृष्टिगोचर हो रही है।

भारत में लगातार देशी एवं विदेशी पर्यटकों में होने वाली वृद्धि को देखते हुए आज इसकी महत्ता महसूस की जा रही है।

पर्यटन का महत्व

पर्यटन एवं इसकी गतिविधि की विस्तृत विषय सामग्री होने के कारण इसका महत्व निरंतर बढ़ता ही गया और आज यह एक 'उद्योग' का रूप ले लिया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने इसे 2002 में उद्योग का दर्जा भी प्रदान कर दिया है। इसके महत्व में हो रही निरंतर वृद्धि के पीछे निम्न कारण है–

क्षेत्रीय विकास में सहायक

उच्च स्तरीय विकास हो जाने के बाद अब सरकार और समाज का स्थान क्षेत्रीय विकास की और बढ़ा है। क्योंकि समग्र विकास, बहुस्तरीय विकास के बिना संभव नहीं है। आज ग्रामीण पारिस्थितिकी में पर्यटन की अपार संभावनाएं विद्यमान है क्योंकि यहाँ उपलब्ध संसाधन पर्यटकों की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए पर्याप्त है। अतः निचले स्तर में विकास के कई मापदण्ड अपना लेने के बाद भी परिणित आपेक्षित नहीं हुई। जबकि पर्यटन का पैरामीटर इसके लिए सही साबित हो सकता है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-IV*December-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आर्थिक वृद्धि

पर्यटकों एवं पर्यटन गतिविधियों से प्राप्त धन क्षेत्रीय एवं आर्थिक विकास में सहायक होता है। पर्यटन में हर स्तर के मानव समूह को कार्य करने एवं उसके बदले लाभ प्राप्त करने की संभावना है। अर्थ प्राप्ति/सृजन इसकी मूल अवधारणा में है। पर्यटन हर स्तर पर मुद्रादायक है। विशेष रूप से स्थानीय स्तर पर इसके और अधिक लाभ बढ़ जाते हैं।

रोजगार मूलक

पर्यटन सम्बन्धी क्रियाओं में संलग्न लोगों को रोजगार उनको उनकी योग्यता अनुसार उपलब्ध कराता है। वस्तु विक्रय से लेकर उत्पादक, उपभोक्ता, टूर–ऑपरेटर, टूर एवं ट्रवल, प्रशिक्षक, आवास–वितरक तक सभी लोगों को इसमें पर्याप्त रोजगार की संभावना है।

पर्यावरणीय/पारिस्थितिकी संरक्षण

पर्यटन के द्वारा पर्यावरण या पारिस्थितिकी को सुरक्षित करना इसका अन्य महत्वपूर्ण महत्व है। क्योंकि स्थानीय पर्यावरण संरक्षण को बढ़ाकर इसकी गतिविधि को बढ़ाया जा सकता है। स्थानीय संस्कृति को संरक्षित करना इसकी संकल्पना का अहं बिन्दु है।

सामाजिक सद्भावना

पर्यटन के द्वारा समाज के विभिन्न संगठनों, समुदायों, वर्गों के बीच सामाजिक सौहार्द्र स्थापित किया जा सकता है। क्योंकि पर्यटक की कोई जाति नहीं होती है। वही पर्यटन सुविधाओं में संलग्न व्यक्ति किसी की जाति, धर्म व सम्प्रदाय का हो सकता है। ऐसी स्थिति में एक देश के लोगों का दूसरे देश के लोगों से सीधा सम्पर्क होता है तथा वहाँ की संस्कृति को समझने व परखने के साथ ही साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भावना की अनुभूति होती है। जिससे एक–दूसरे में सहकारिता की भावना विकसित होती है तथा राष्ट्रीय एकता, विश्वबन्धुत्व एवं राष्ट्रीय चरित्र का सामंजस्य विकसित होता है।

लघु एवं कुटीर उद्योगों का सृजन

पर्यटन के द्वारा लघु एवं कुटीर उद्योगों को विकसित कर उनका विकेन्द्रीकरण किया जा सकता है। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पर्यटन सम्बन्धी संसाधनों को विकसित कर छोटे–छोटे उद्योगों को विकसित किया जा सकता है।

आबृजन पर प्रतिबंध

पर्यटन को फलीभूत करके स्थानीय स्तर से नगरीय स्तर की ओर होने वाले प्रवास को रोका जा सकता है। जिससे नगरीय भयावह जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित कर संतुलित नगरीय विकास किया जा सकता है।

ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक धरोहर का संरक्षण

आज भी भारत के स्थानीय/ग्रामीण क्षेत्रों में ऐतिहासिक महत्व के अनेक स्थल मौजूद है जो संरक्षण के अभाव में अपनी अंतिम सांसे गिन रहे हैं। जैसे– किलें, मढ़ियाँ, गढ़ियाँ, पोखर, स्मारक आदि को संरक्षित करके, इन्हें पर्यटन से जोड़कर उनको नया जीवन दिया जा सकता है तथा इनको मुद्रादायिनी संसाधन बनाया जा सकता है।

संस्कृति संरक्षण

भारत अपनी रंग–बिरंगी संस्कृति के कारण दुनिया में अलग पहचान रखता है। पिछले कुछ वर्षों से इसका लगातार अवक्रमण हो रहा है और हम विदेशी संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं जो अपनी संस्कृति के नष्ट होने के प्रारंभिक लक्षण है। इस संस्कृति को पर्यटन एवं पर्यटकों से जोड़कर जीवन्तता प्रदान की जा सकती है।

शोध एवं अनुसंधान

अनुसंधान की विस्तृत विषय–सामग्री पर्यटन में भरपूर मात्रा में है। नित नवीन भूदृश्यों की खोज, मौजूदा संसाधनों में उत्तरोतर वृद्धि तथा पर्यटन के विविध आयाम जैसे अनेक कारकों में प्रगति अभी भी अवशेष है। इन क्षेत्रों में अभी भी पर्याप्त सुधार एवं विकास की संभावनायें है।

राजनीतिक एवं प्रशासनिक सम्बन्ध

विभिन्न देशों के बीच होने वाले राजनयिक सम्बन्धों में मधुरता का भाव पर्यटन द्वारा भली–भांति से भरा जा सकता है। क्योंकि मानवीय प्रकृति जिज्ञासु होती है। वह अपने दायरे से बाहर निकलकर और कुछ जानने की इच्छा रखती है। इसके लिए पर्यटन का आगोश स्वागतार्थ तैयार रहता है। हर देश में कुछ न कुछ अस्मरणीय स्थल होते है जो हमेशा से ही मन मोहने वाले होते हैं। बस इन्ही का दर्शन एवं यादें दो दिलों को अटूट बंधन में बांध देती है और फिर देशों के बीच विकास की राह खुल जाती है।

भारत में पर्यटन का भविष्य

टूरिज्म भारत में एक फलता–फूलता उद्योग है। इससे हमारे देश को बड़ी मात्रा में विदेशी पूँजी प्राप्त होती है। भारत पर्यटन स्थलों की दृष्टि से एक सम्पन्न देश है। यहाँ विविध प्रकार के पर्यटन स्थल, अपनी छटा को समेटे हुए चारों दिशाओं में फैले हुए है। विश्व प्रसिद्ध ताजमहल, खजुराहो में मंदिर, संगमरमर की चट्टाने, लाल किला एवं कुतुबमीनार, अजमेर, भरतपुर पक्षी उद्यान, कान्हा किसली राष्ट्रीय पार्क, रामेश्वरम्, कन्याकुमारी, समुद्रीय किनारे आदि के अलावा मेले, पुष्कर–राजस्थान, सूरजकुण्ड–हरियाणा, सोनपुर–बिहार, कुल्लू का दशहरा मेला हिमाचल प्रदेश, भावनाथ–गुजरात के अलावा प्रसिद्ध गुफायें अमरनाथ, अजन्ता, ऐलोरा, उदयगिरि, बाघ आदि अनेक आकर्षण है।

भारत की जी.डी.पी. में पर्यटन का योगदान 6.8 प्रतिशत है जो तीसरा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा प्राप्त करने वाला क्षेत्र है। पर्यटन से वर्ष 2013 में 18.13 विलियन डॉलर विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई। वहीं इस क्षेत्र से भारत को 8.78 प्रतिशत रोजगार मिल रहा है। लेकिन विश्व में विदेशी पर्यटकों के आने की दृष्टि से इसका 42वॉ स्थान है तथा एशियाई देशों में 11वॉ है।

भारत का भविष्य एवं पर्यटन के विविध आयाम

आज पर्यटन अनेक रूपों में हमारे सामने आ चुका है। भारत का भविष्य इस दृष्टि से सुनहरा है। आज पर्यटन को निम्न रूपों को विकसित करने की जरूरत है–

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-IV*December-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

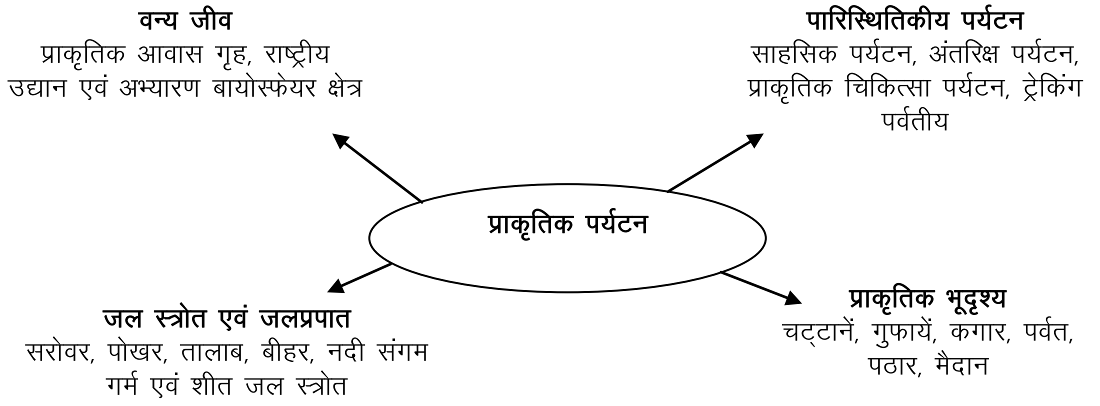

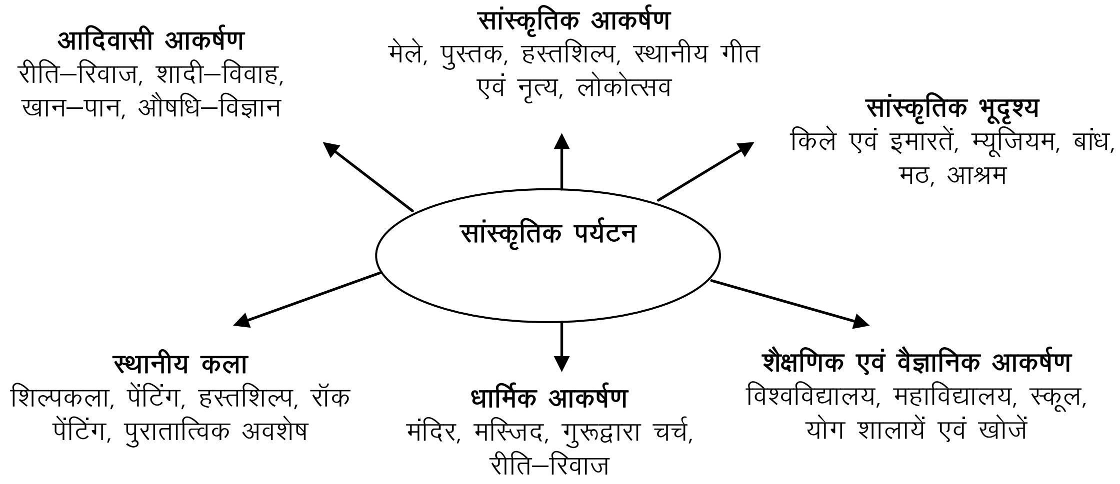

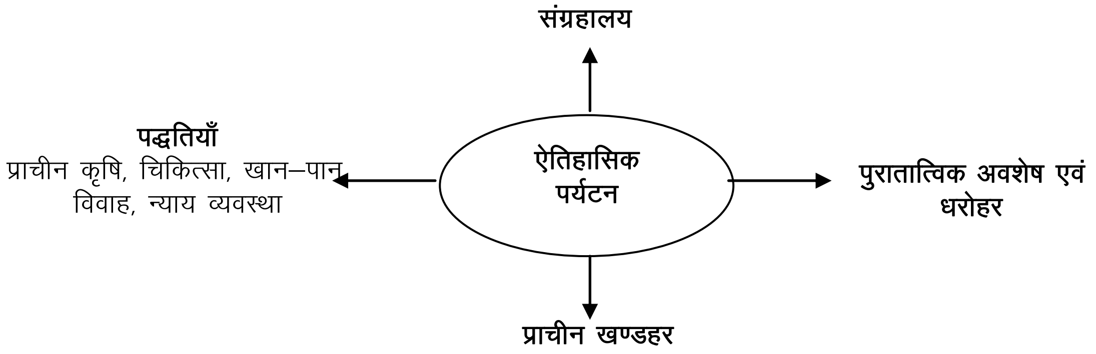

निष्कर्ष

पर्यटन आज विश्व परिदृश्य में तेजी से उभरता हुआ आर्थिक आमदनी का आधार बनता जा रहा है। विशेष तौर से ऐसे देशों में जो अल्प विकसित है या विकासशील है। भारतीय संदर्भ में इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि यहाँ मानव संसाधन एवं प्राकृतिक संसाधन दोनों पर्याप्त मात्रा में मौजूद है। जरूरत है इसके व्यापक प्रचार–प्रसार की, इसकी आवश्यकता एवं महत्व को जानने की। क्षेत्रीय या स्थानिक स्तर से उसकी शुरूआत की जरूरत है। क्योंकि इससे स्थानीय संसाधनों का संरक्षण होगा एवं लोगों को रोजगार के अवसर मिलेगें। इसके अलावा निम्न रेखाचित्र पर्यटन की वृद्धि में सहायक सिद्ध हो सकता है–

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-IV*December-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

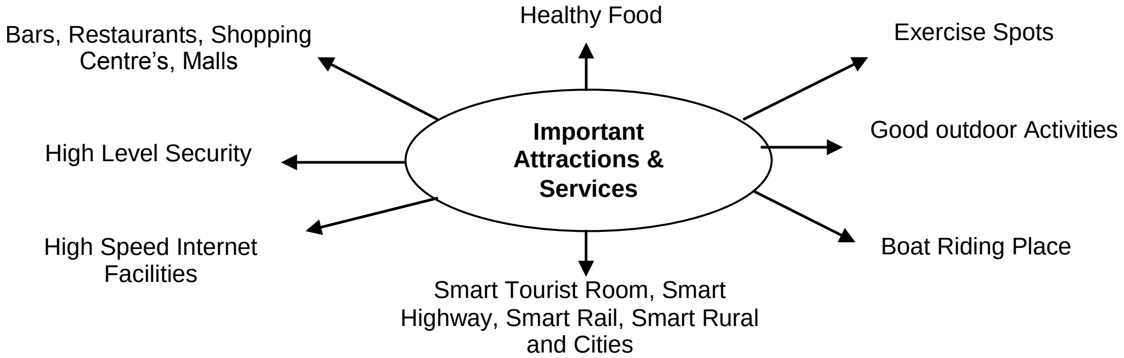

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बंसल, सुरेशचन्द्र (2006), पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन आधारभूत सिद्धांत, मीरा प्रकाशन, सहारनपुर।
2. अनुरागी, आर.बी. (2007), 'बघेलखण्ड में पारिस्थितिकी पर्यटन पी–एच. डी. शोध प्रबंध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
3. जोशी, अतुल, कुमार अमित एवं जोशी महिमा (2010), 'भारत में आधुनिक पर्यटन', रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
4. Biruncha, V. Dhulasi (2011), 'Environmental Challenges towards Tourism', Kanishka Publishers, Distributers, New Delhi.
5. Bhatia, A.K. (2014), 'International Tourism Management', Sterling Publishers (P) Ltd., New Delhi.
6. Nelson, Velvet (2013), 'An Introduction To the Geography of Tourism', Rawat Publications Jawahar Nagar, Jaipur, India.